उपकार समाचार

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ

न्यूज लेटर

वर्ष 18 अंक 1–2 एवं वर्ष 19 अंक 1–2 (संयुक्तांक) जनवरी, 2021 – दिसम्बर, 2022

संदेश

भारत विश्व में मोटे अनाजों के अग्रणी उत्पादकों में से एक है, जिसमें इसकी भागीदारी लगभग 41 प्रतिशत है, जिसे बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक लाने का लक्ष्य रखा गया है। चावल और गेहूं जैसे अधिक खपत वाले अनाजों की तुलना में मोटे अनाजों में पौष्टिक तत्व अधिक होते हैं, जो जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों से लड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुख्य मोटे अनाजों में ज्वार, बाजरा, रागी (मडुवा) के अलावा कोदो, कुटकी, सांवा (झिंगोरा), कंगनी (काकुन), चीना आदि शामिल हैं। मोटे अनाज न केवल पोषक तत्त्वों का भंडार हैं बल्कि ये जलवायु सहिष्णु भी हैं। सूखा सहन करने की क्षमता, फसल पकने की कम अवधि, उर्वरकों एवं खाद की न्यूनतम मांग के कारण कम लागत तथा रोग–कीटों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता के साथ कम पानी और कृषि अयोग्य भूमि तथा विपरीत मौसम में भी ये अनाज उगाए जा सकते हैं।

शहरों में मोटे अनाजों के सेवन का प्रचलन कम है लेकिन ग्रामीण इलाकों में आज भी इनका खूब सेवन किया जाता है। पहले लोग गेहूं और चावल की अपेक्षा मोटे अनाजों का सेवन अधिक करते थे, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं कम होती थीं किन्तु शहरीकरण और समय के साथ खानपान में काफी बदलाव आया है, जिससे इनका प्रयोग कम हो गया था किंतु वर्तमान में पौष्टिक अनाज या स्मार्ट फूड्स के रूप में मोटे अनाज पुनः अपना स्थान प्राप्त कर रहे हैं।

भारत में राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात और मध्य प्रदेश शीर्ष मोटा अनाज उत्पादक राज्य हैं। उत्तर प्रदेश में भी मोटे अनाज की खेती के प्रोत्साहन एवं जागरुकता के लिये प्रदेश सरकार द्वारा निरन्तर प्रयास किये जा रहे हैं। वर्ष 2023 'अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट्स ईयर' के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके क्रम में मोटे अनाज की खेती एवं इसके उपयोग के प्रोत्साहन/जागरुकता हेतु अनुसंधान, उत्पादन, प्रसंस्करण एवं विपणन क्षेत्र में विकास हेतु योजनाएं एवं लक्ष्य निर्धारित किये जा रहे हैं। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये मोटा अनाज की खेती के बारे में किसानों को जागरुक कर प्रदेश में मोटा अनाज उत्पादन को बढ़ाना होगा साथ ही मोटा अनाज के मूल्य संवर्धन पर भी विशेष बल देना होगा ताकि इसके माध्यम से किसानों की आय में वृद्धि तथा रोजगार सृजन भी हो सके। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिये कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि संस्थानों, कृषि विज्ञान केन्द्रों को गहन प्रयास करने होंगे। मुझे आशा है कि हम सबके समन्वित प्रयास से हमारा प्रदेश शीघ्र ही मोटे अनाज के उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य बन सकेगा।

(विकास गुप्ता)
अध्यक्ष
उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद

महानिदेशक की कलम से...

हरित क्रांति से देश एवं प्रदेश में खाद्यान्न उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई और भारत अनाज उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर हो सका, जिसमें प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान था। हरित क्रांति के दौरान संकर बीजों, कीटनाशकों, खरपतवारनाशी तथा रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से उत्पादन तो बढ़ा किंतु अब इन सबका नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई देने लगा है। उत्पादकता में स्थिरता, जैव विविधता का ह्रास, जलवायुविक परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण एवं रसायनों के बढ़ते प्रयोगों आदि के कारण कृषि एवं कृषकों की समस्याएँ निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। रासायनिक खेती के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से न केवल खाद्यान्नों और वनस्पतियों का स्वाद प्रभावित हो रहा है बल्कि खाद्यान्नों के नैसर्गिक गुण भी प्रभावित हो रहे हैं और मानव स्वास्थ्य को भी खतरा उत्पन्न हो गया है। आज से लगभग 60 वर्ष पूर्व हमारे देश में विशुद्ध रूप से प्राकृतिक खेती की जाती थी, उस समय पोषण से भरपूर उत्पादन प्राप्त होता था। वर्तमान में प्राकृतिक खेती ही एकमात्र विकल्प है, जिससे न केवल उच्च गुणवत्तायुक्त, स्वास्थ्यवर्द्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थों की उपलब्धता बढ़ेगी, बल्कि रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों पर होने वाले व्यय में बचत से उत्पादन लागत को कम करने में भी मदद मिलेगी। इसके अतिरिक्त मृदा उर्वरता में सुधार के साथ–साथ किसानों की आमदनी में भी इजाफा होगा। प्राकृतिक खेती देसी गौ आधारित होने के कारण इसमें किसान के पास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही कृषि पर बल दिया जाता है।

बढ़ते पर्यावरण संकट को कम करने में भी प्राकृतिक खेती महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कृषकों को भी रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों का अहसास होने लगा है। ऐसे में प्रगतिशील किसानों ने प्राकृतिक खेती का विकल्प अपनाना शुरू कर दिया है। खेती के टिकाऊपन के लिये प्राकृतिक खेती एक अनिवार्यता होती जा रही है। प्राकृतिक खेती से उगाई गई फसलों/उत्पादों की मांग भी बढ़ रही है जिससे प्राकृतिक खेती की संभावनाओं को बढ़ावा मिल रहा है।

वर्तमान में प्राकृतिक खेती की स्थिति संतोषजनक नहीं है किंतु जागरुकता से इसमें धीरे–धीरे विस्तार हो रहा है। सरकार द्वारा भी प्राकृतिक कृषि के प्रोत्साहन एवं जागरुकता के लिये कई योजनायें चलाई जा रही हैं। भारत के कई राज्यों में प्राकृतिक खेती बड़े पैमाने पर अपनाई जा रही है और धीरे–धीरे अन्य राज्यों में भी यह लोकप्रिय हो रही है, लेकिन इसके विस्तार की गति अत्यधिक धीमी है। इसके लिए और भी ठोस प्रयास करने की जरूरत है। इस हेतु सरकार के साथ–साथ कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र की सभी संस्थाओं को मिल कर प्रयास करने होंगे।

(संजय सिंह)

सतत कृषि के लिए अभिनव दृष्टिकोण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) के 33वें स्थापना दिवस के अवसर पर 14 जून, 2022 को ''सतत कृषि के लिए अभिनव दृष्टिकोण'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद तथा भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के सभागार में किया गया। संगोष्ठी का उदघाटन मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा वर्चुअल रुप से किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में वर्चुअल रुप से उद्बोधन देते हुए मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि श्री सूर्य प्रताप शाही, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. थे। उदघाटन सत्र के सम्मानित अतिथि श्री बलदेव सिंह औलख, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र., कैप्टन(से.नि.) विकास गुप्ता, माननीय अध्यक्ष, उपकार, डा. देवेश चतुर्वेदी, अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, डा. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक, प्रसार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, डा. एन.पी. सिंह, कुलपति, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा थे। इस अवसर पर 21 प्रगतिशील कृषकों को उनके कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्जवलित करते हुए माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. श्री सूर्य प्रताप शाही के साथ माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. श्री बलदेव सिंह औलख, माननीय अध्यक्ष, उपकार कैप्टन (से.नि.) विकास गुप्ता, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ डा. ए.डी. पाठक एवं महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

संगोष्ठी में प्लेनरी लेक्चर डा. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक, प्रसार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा दिया गया। एग्री फार्मा सत्र में डा. अभिमन्यु राय, राज्य विपणन प्रबन्धक, इफको, श्री आसिफ रियाज, एजीएम, तारा ब्लूम्स प्रा. लि., पदमश्री भारत भूषण त्यागी, प्रगतिशील कृषक, बुलन्दशहर, पदमश्री राम सरन वर्मा, प्रगतिशील कृषक, बाराबंकी, डा. ब्रह्म सुमन त्रिपाठी, जीएम, कोर्टेवा एग्री साइंस तथा श्री महेश कुमार पाण्डेय, कावेरी सीड्स द्वारा व्याख्यान दिये गये। तकनीकी सत्र में डा. ए.डी. पाठक, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, डा. यू.एस. सिंह, परामर्शी, इरी, डा. एस.के. शुक्ला, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ, श्री पी.एस. ओझा, राज्य सलाहकार, एफपीओ सेल, कृषि विभाग, उ.प्र., डा. उमेश सिंह, विभागाध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ, डा. अवनी कुमार सिंह एवं डा. राजीव कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, डा. वैदुर्य प्रताप शाही, विभागाध्यक्ष, आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, शुआट्स, प्रयागराज द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

संगोष्ठी में सम्मानित किये गये कृषकों के साथ माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र श्री सूर्य प्रताप शाही, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. श्री बलदेव सिंह औलख, माननीय अध्यक्ष, उपकार कैप्टन (से.नि.) विकास गुप्ता, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ डा. ए.डी. पाठक एवं महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

संगोष्ठी में विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि एवं तत्संबंधी संस्थानों/विभागों, कृषि महाविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, शासन के अधिकारियों, किसानों, छात्र–छात्राओं तथा अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। संगोष्ठी की महत्वपूर्ण संस्तुतियां निम्नवत हैं–

- प्राकृतिक खेती का प्रदर्शन विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से कराया जाये।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की सम्बन्धित शोध संस्थाओं तथा प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा मोटे अनाज की विभिन्न फसलों की विशिष्ट जलवायुवीय परिस्थितियों हेतु उन्नत बीज तथा तकनीक विकसित किये जाने के संबंध में अनुसंधान कार्यक्रम क्रियान्वित कराए जायें।
- जिन क्षेत्रों में कम वर्षा होती है वहाँ धान की सीधी बीजाई अर्थात डी.एस.आर. तकनीक को बढ़ावा दिया जाये।
- बुन्देलखण्ड तथा विन्ध्यन क्षेत्र में तिलहनी फसलों विशेषकर राई एवं सरसों तथा तिल की खेती को बढ़ावा दिये जाने के विशेष प्रयास किये जायें।
- आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक यथा जिनोम एडिटिंग, आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स, डिजीटल एग्रीकल्चर, स्वायल जीयो मैपिंग इत्यादि को प्रभावी टूल्स के रूप में शामिल किया जाये।
- चावल, गेहूं एवं अरहर में प्रजाति विकास अनुसंधान निम्नलिखित उद्देश्यों के दृष्टिगत किया जाये–
  - चावल में कम ग्लासमिक इन्डेक्स वाली प्रजातियों का विकास किया जाये।
  - काला नमक चावल में ऐसी प्रजातियों का विकास जिनकी पैदावार अधिक हो, बीमारियों के प्रति सहिष्णु हो, साथ ही सुगन्ध के परिप्रेक्ष्य में 2एपी रसायन की मात्रा 400पीपीएम या उससे अधिक हो।
  - गेहूँ में परिपक्वता के समय ताप सहिष्णु ऐसी प्रजातियों का

विकास जो 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान सह सके।

- ❖ अरहर की 200 दिन से कम परिपक्वता अवधि वाली प्रजातियों का विकास।
- जैविक कृषि हेतु विभिन्न जैव उत्पाद यथा–बायोडायनमिक कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, नाडेप कम्पोस्ट, काऊ पैट पिट, वर्मी वाश इत्यादि को बनाने की तकनीकी का प्रचार–प्रसार कृषकों के मध्य किया जाये।
- खेत में उपयोग की जाने वाली यूरिया की मात्रा को क्रमिक रूप से नैनो यूरिया से प्रतिस्थापित करने के प्रयास किये जायें।
- प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों हेतु पृथक से 05 वर्षों की कार्ययोजना तैयार कराई जाये जिसमें क्षेत्रों हेतु उपयुक्त फसलों, प्रजातियों, बीज एवं प्रजाति प्रतिस्थापन दर, उन्नत कृषि तकनीकी, प्रसंस्करण तकनीक, विपणन इत्यादि को शामिल किया जाये।
- प्रदेश के बुन्दलेखण्ड क्षेत्र में 40 प्रतिशत से अधिक कृषि योग्य क्षेत्र खरीफ मौसम में खाली पड़ा रहता है। अतः कृषि विश्वविद्यालय, बॉदा, कृषि विभाग, उपकार तथा प्रदेश में स्थित शोध संस्थानों के समन्वयन से खरीफ मौसम हेतु बुन्देलखण्ड क्षेत्र में फसल सघनीकरण को बढ़ावा देने के लिए कार्ययोजना तैयार की जाये।
- पोषकयुक्त नवीन फसलों यथा–किनोवा, ड्रैगन फ्रूट, विभिन्न मिलेट्स इत्यादि पर अनुसंधान कार्य सम्पन्न कराये जायें।

मोटा अनाज (मिलेट) पर वेबिनार सम्पन्न

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) के 32वें स्थापना दिवस के अवसर पर 14 जून, 2021 को "Millets as Smart Food: Harnessing Opportunities to Boost Immunity and Nutritional Security" विषयक वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार की मुख्य अतिथि माननीय श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्रीमती आनन्दीबेन पटेल थीं। वेबिनार की अध्यक्षता माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. श्री सूर्य प्रताप शाही द्वारा की गई। मुख्य अतिथि द्वारा मोटे अनाजों में फाइबर एवं अन्य रोग प्रतिरोधक पोषक तत्वों की मात्रा पर प्रकाश डालते हुए अवगत कराया गया कि ज्वार, बाजरा और रागी जैसे मोटे अनाजों में पौष्टिकता प्रचुर मात्रा में होती है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र तथा दक्षिण–पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में इन फसलों की खेती को बढ़ाये जाने की संभावनाओं पर बल दिया। वेबिनार में कैप्टन (से.नि.) विकास गुप्ता, माननीय अध्यक्ष, उपकार, डा. देवेश चतुर्वेदी, अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, डा. तिलक राज शर्मा, उपमहानिदेशक, फसल, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा विशिष्ट अतिथि के रुप में प्रतिभाग किया गया।

वेबिनार में उद्बोधन देते हुए मुख्य अतिथि माननीय श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्रीमती आनन्दीबेन पटेल

वेबिनार के मुख्य वक्ता डा. जे.वी. पाटिल, पूर्व निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद, डा. सी. तारा सत्यवती, परियोजना समन्वयक, भा.कृ.अनु.प.–एआईसीआरपी ऑन बाजरा, जोधपुर, डा. विलास ए. टोनापी, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद तथा डा. वी.के. सिंह, निदेशक, कृषि, उत्तर प्रदेश थे।

वेबिनार में प्रतिभाग करते हुए वैज्ञानिक एवं अधिकारीगण

वेबिनार में कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं वैज्ञानिकों, कृषि एवं तत्संबंधित विभागों के अधिकारियों, विभिन्न कृषि संस्थानों, कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं उपकार के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। वेबिनार की महत्वपूर्ण संस्तुतियां निम्नवत हैं–

1. कृषि विश्वविद्यालय एवं कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश का भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अखिल भारतीय फसल अनुसंधान परियोजना (मोटे अनाज) के साथ नजदीकी सामन्जस्य स्थापित किया जाये, जिससे मोटे अनाज के कुशल उत्पादन, मूल्य संवर्धन तथा प्रसंस्करण से संबंधित उपयुक्त तकनीकों का लाभ प्रदेश को मिल सके।
2. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की सम्बन्धित शोध संस्थाओं तथा प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा मोटे अनाज की विभिन्न फसलों की विशिष्ट जलवायुवीय परिस्थितियों हेतु प्रजाति एवं तकनीकी विकास के लिये अनुसंधान कार्यक्रम क्रियान्वित कराये जाये।
3. गुणवत्तायुक्त बीजों की उपलब्धता के दृष्टिगत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रदेश के अयोध्या, बांदा तथा कानपुर स्थित कृषि विश्वविद्यालयों में मोटे अनाज से संबंधित सीड हब स्थापित किये जायें, जिससे अभिजनक बीज मॉग की पूर्ति हो सके।
4. उपयुक्त प्रजातियों के चयन हेतु भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रदेश में और अधिक प्रदर्शन सम्पन्न कराये जायें।
5. प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में खरीफ में मोटे अनाज की खेती को बढ़ावा देने के लिए कृषि विश्वविद्यालय, बॉदा, कृषि विभाग, उ.प्र. तथा भा.कृ. अनु.प.–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के समन्वयन से कार्ययोजना तैयार की जाये।
6. मोटे अनाज के मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण एवं विपणन हेतु कृषकों, कृषक उत्पादक सगठनों, उद्योग तथा बाजार के बीच में उचित लिंकेज के प्रयास किये जायें।
7. फर्रुखाबाद, आगरा, मथुरा, गाजियाबाद जनपदों के अतिरिक्त प्रदेश के अन्य उपयुक्त भागों में भी बाजरे की खेती को खरीफ एवं रबी के मध्य फिलर क्रॉप के रूप में किये जाने का परीक्षण कराते हुए प्रचार–प्रसार सम्पन्न कराया जाये।

किसानों की आय में अभिवृद्धि हेतु अभिनव प्रौद्योगिकियाँ विषयक कार्यशाला सम्पन्न

उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) द्वारा 16 नवम्बर, 2022 को "किसानों की आय में अभिवृद्धि हेतु अभिनव प्रौद्योगिकियाँ" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि श्री सूर्य प्रताप शाही, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उत्तर प्रदेश थे। कार्यशाला की अध्यक्षता कैप्टन (से.नि.) विकास गुप्ता, माननीय अध्यक्ष, उपकार द्वारा की गई। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री मनोज कुमार सिंह, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन थे। कार्यशाला में श्री अनुराग यादव, सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन व श्री अंजनी कुमार सिंह, निदेशक, राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद द्वारा सम्मानित अतिथि के रुप में प्रतिभाग किया गया। कार्यशाला में कृषि से जुड़े विभिन्न स्टार्टअप्स/कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भाग लेकर अपने विचार प्रस्तुत किये जिसमें सुश्री श्रीकला रामामूर्ति, संस्थापक व निदेशक, फार्मीटोपिया प्राईवेट लिमिटेड, बेंगलुरू, कर्नाटक; श्री नितिन गुप्ता, निदेशक, सेल्स, हेक्टेयर, सिक्कल इनोवेशन प्राईवेट लिमिटेड, मोहाली, पंजाब, सुश्री प्रीती चौधरी, संस्थापक व सी.ई.ओ., हार्वेस्ट ग्लोबल प्राईवेट लिमिटेड, गुरूग्राम, हरियाणा; श्री जसवीर सिंह, संस्थापक व सी.ई.ओ., सेंस इट आऊट इंटेलीजेंट सोल्यूशन प्राईवेट लिमिटेड, पुणे, महाराष्ट्र; प्रो. राजीव अग्रवाल, वरिष्ठ निदेशक, लॉयड इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलाजी, ग्रेटर नोएडा, उ.प्र. डा. मनीष सारस्वत, प्रोफेसर, मेकेनिकल इंजीनियरिंग व विभागाध्यक्ष, लॉयड इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलाजी, ग्रेटर नोएडा, उ.प्र.; श्री रजत वर्धन, संस्थापक व सी.ई.ओ., एग्रोनेक्सट सर्विसेज प्राईवेट लिमिटेड, नोयडा तथा श्री विवेक चतुर्वेदी, प्रगतिशील कृषक व इनोवेटर, विकल्प अल्टरनेटिव फार्मटेक प्राईवेट लिमिटेड, कानपुर प्रमुख थे। कार्यशाला में प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों के निदेशक शोध व निदेशक प्रसार, प्रदेश के कृषि एवं संबंधित विभागों के निदेशकों, अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. श्री सूर्य प्रताप शाही, कार्यशाला की अध्यक्षता करते माननीय अध्यक्ष, उपकार कैप्टन (से.नि.) विकास गुप्ता, विशिष्ट अतिथि, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन श्री मनोज कुमार सिंह, महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह एवं अन्य अधिकारी/वैज्ञानिकगण

कार्यक्रम में प्रस्तुत विभिन्न तकनीकों एवं उनकी उपयोगिता के दृष्टिगत गहन विचार–विमर्श उपरांत प्रदेश हेतु निम्नलिखित संस्तुतियॉं दी गई–

- एग्रोनेस्ट प्रा. लि., नोएडा द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर की तकनीक के आधार पर विकसित मृदा परीक्षण यंत्र भू–परीक्षक का अन्य मृदा परीक्षण किट व कृषि विश्वविद्यालयों की प्रयोगशाला में किये जा रहे मृदा परीक्षण का सममूल्य पर समकक्षता का पुष्टीकरण कराकर उपयुक्त पाये जाने की स्थिति में भू–परीक्षक की संस्तुति संबंधित विभागों को कृषकों के मध्य प्रचलन हेतु उपलब्ध कराई जाय।
- फार्मिटोपिया प्राईवेट लिमिटेड, बैंगलुरु द्वारा विकसित स्मार्ट डिजिटल प्लेटफार्म फार क्रॉप प्रोडक्शन की विस्तृत कार्य प्रणाली तथा उपयोगिता संबंधी मॉडल का उत्तर प्रदेश की कृषि परिस्थितियों में पुष्टीकरण कराकर संबंधित विभागों को कृषकों के मध्य अपनाने हेतु संस्तुत किया जाय।
- लॉयड इन्स्टीट्यूट आफ इन्जीनियरिंग एण्ड टेक्नोलाजी, ग्रेटर नोएडा द्वारा विकसित ड्रोन का, वर्तमान में लागू प्रमाणीकरण एवं अन्य नियामक प्रक्रिया के दृष्टिगत, परीक्षण कराते हुये उपयोगी होने पर शासन को संस्तुति उपलब्ध कराई जाय।
- सेंस इट आऊट इन्टेलीजेन्ट सॉल्यूशन्स प्राईवेट लिमिटेड, पुणे द्वारा विकसित सिक्का– (सेंसर बेस्ड इनटेलीजेंट क्रॉप सेन्ट्रिक ऑटोमेशन सेंसर) आधारित स्वचालित सिंचाई प्रणाली का परीक्षण कराकर उपयुक्त पाये जाने पर सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों पर स्थापित किये जाने का प्रयास किया जाय।
- हार्वेस्ट ग्लोबल प्राईवेट लिमिटेड, गुरूग्राम द्वारा फसल बुवाई व कटाई, मृदा पोषक तत्व मानचित्रण, फसल प्रकार मानचित्रण, फसल क्षेत्रफल का अनुमान, फसल का अनुश्रवण, निगरानी, फसल नुकसान का अनुमान, फसल उपज का अनुमान, फसल मूल्य विश्लेषण तथा मांग आधारित भौगोलिक मूल्यांकन, वानिकी और जल विज्ञान के आंकलन के लिये स्थानीय आंकड़ों के विश्लेषण आदि हेतु विकसित माडल का परीक्षण प्रदेश के किसी एक जनपद में कराकर इसकी पुष्टि वास्तविक आंकड़ों से करने के उपरांत सम्पूर्ण प्रदेश के लिये जनपदवार योजना तैयार कर शासन/कृषि विभाग को वित्त पोषण हेतु उपलब्ध कराई जाय।
- अल्टरनेट फार्मटेक प्राईवेट लिमिटेड, कानपुर द्वारा विकसित ई–ब्रशकटर, बैल चालित ट्रैक्टर, फ्लैक्सी–स्प्रिंकलर, साइथ (कम्प्लीट एवं मिनी किट), व्हील–हो, हैंड वीडर, पैडी वीडर, सोलर मल्टी–क्राप थ्रेशर आदि यंत्रों का पूर्व में विकसित यंत्रों के सापेक्ष अध्ययन कराकर उपयुक्तता की स्थिति में संबंधित विभागों को कृषकों के मध्य प्रचार–प्रसार हेतु उपलब्ध कराया जाय।
- हेक्टेयर, सिकल इनोवेशन प्रा.लि., मोहाली द्वारा विकसित यंत्रों यथा Mango Picker, Fruit Picker with composite material, Tractor operated Tree Shaker, Hand Tractor with multi attachments (Weeding, Soft tilling, Making furrow), Lemon Picker, Papaya Picker, Drumstick Harvester, Plant Uprooter, Solar Light Insect Trapper, Kinnow Sorting Grading and Waxing Plant, Grading and Counting of Potato Tubers based on Lenght and Diameter, World's first single machine for multiple fruits and vegetable sorting and grading का पूर्व में विकसित यंत्रों के सापेक्ष अध्ययन कराकर उपयुक्तता की स्थिति में संबंधित विभाग को कृषकों के मध्य प्रचार–प्रसार हेतु उपलब्ध कराया जाय।

जीनोम एडिटिंग पर कार्यशाला सम्पन्न

उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ (उपकार) तथा बायोटेक कंसोर्टियम इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 06 जुलाई, 2022 को "कृषि में जीनोम एडिटिंगः विज्ञान, सामर्थ्य और नीतियां" विषयक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन वै.औ.अ.प.–राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में किया गया। कार्यक्रम के उदघाटन सत्र में प्रदेश के कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान के अपर मुख्य सचिव डा. देवेश चतुर्वेदी ने मुख्य अतिथि के रूप में वर्चुअल सहभागिता की जबकि भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के

निदेशक / कुलपति डा. ए.के. सिंह ने विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा वै.औ.अ.प.–केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान, लखनऊ के निदेशक डा. पी.के. त्रिवेदी तथा भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पादप जैवप्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली के निदेशक डा. ए.के. शासने ने सम्मानित अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया।

जीनोम एडिटिंग कार्यशाला में उद्बोधन देते हुए महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

इस कार्यशाला में देश एवं प्रदेश के विभिन्न संस्थानों के ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों यथा डा. पी.के. सिंह एवं डा. ए.पी. साने, प्रधान वैज्ञानिक, वै.औ. अ.प.–राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; डा. अच्युत कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी; डा. संजीव कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, डा. आलोक दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु. प.–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर; डा. नवनीत चन्द्र गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पादप जैवप्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली तथा डा. दीपक प्रेम, मैनेजर, रेगुलेटरी एण्ड साइंटिफिक अफेयर, बायर क्राप साइंस लिमिटेड ने विभिन्न सत्रों में अपने विचार प्रस्तुत किये तथा इस तकनीक को प्रदेश में पौध सुधार के संदर्भ में व्यापकता प्रदान किये जाने हेतु चर्चा की। इस कार्यशाला में विभिन्न संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों के लगभग 200 अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं शोध छात्रों ने प्रतिभाग किया।

मिलेट दिवस सम्पन्न

बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा एवं उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार), लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में 20 जुलाई, 2022 को बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा में मिलेट दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, श्री सूर्य प्रताप शाही तथा अतिविशिष्ट अतिथि के रुप में माननीय मंत्री, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार तथा कृषि निर्यात, उ.प्र. श्री दिनेश प्रताप सिंह द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में माननीय अध्यक्ष, उपकार कैप्टन (से.नि.) विकास गुप्ता, श्री अयोध्या सिंह पटेल, अध्यक्ष, बुन्देलखण्ड विकास बोर्ड, श्री प्रकाश द्विवेदी, माननीय विधायक, बांदा सदर एवं श्रीमती ओममनी वर्मा, माननीय विधायक, नरैनी उपस्थित थे।

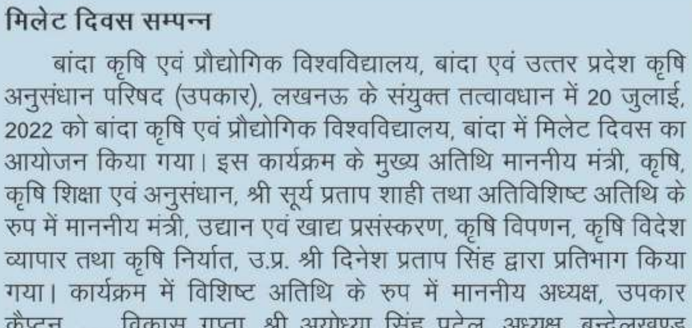

मिलेट दिवस के मुख्य अतिथि माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. श्री सूर्य प्रताप शाही, अतिविशिष्ट अतिथि, माननीय मंत्री, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार तथा कृषि निर्यात, उ.प्र. श्री दिनेश प्रताप सिंह एवं मंच पर आसीन अन्य सम्मानित अतिथि/वैज्ञानिकगण

इस कार्यक्रम में बुन्देलखण्ड क्षेत्र में कम लागत, कम पानी एवं कम संसाधन में अधिक आमदनी के दृष्टिकोण से मिलेट (मोटा अनाज) की खेती किये जाने का आह्वान किया गया। इस परिप्रेक्ष्य में मिलेट के हैदराबाद स्थित अनुसंधान संस्थान से बीज मंगाकर कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसानों को उपलब्ध कराये जाने के निर्देश दिये गये। उत्पादन के साथ–साथ इन फसलों के मूल्य संवर्धन एवं प्रसंस्करण की संभावनाओं पर भी कार्य किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया गया क्योंकि उत्तर प्रदेश के 19 जिलों में मिलेट की खेती होती है। इन फसलों में पोषक तत्वों की अधिकता के दृष्टिगत जन–जन में उपयोग हेतु इनको सप्लाई–चेन तथा पी.डी.एस. के माध्यम से पहुंचाने के निर्देश दिये गये।

इस अवसर पर 10 प्रगतिशील कृषकों को प्राकृतिक खेती व मिलेट पर उत्कृष्ट कार्य करने हेतु सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में उपकार तथा बुन्देलखण्ड एवं विन्ध्यन क्षेत्र के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक, कृषक, महिला कृषक, जन प्रतिनिधि एवं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं प्राध्यापक तथा छात्र–छात्रायें उपस्थित थे।

उपकार नोडल एजेन्सी नामित

प्रदेश में कृषि अनुसंधान, शिक्षा तथा प्रसार कार्यों के सफल संचालन हेतु उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) को कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग के शासनादेश संख्या 715/कृशिअ–67–1099/9/2022, दिनांक 28 अप्रैल, 2022 के द्वारा निम्नलिखित कार्यों हेतु नोडल एजेन्सी नामित किया गया–

1. कृषि विश्वविद्यालयों को परियोजनाओं/योजनाओं पर स्वीकृत धनराशि के व्यय का अनुश्रवण।
2. कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रगति मानक तैयार कर कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यों का अनुश्रवण।
3. कृषि विज्ञान केन्द्रों के मूल्यांकन हेतु संकेतक निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर निर्धारित किया जाना –

   (1) कृषक प्रशिक्षण (2) प्राकृतिक खेती में योगदान (3) बीज उत्पादन (4) विविधीकरण (5) अवस्थापनाओं का उपयोग (6) प्रत्येक केन्द्र की कार्ययोजनाओं को अंतिम रुप से क्रियान्वयन
4. कृषि विश्वविद्यालयों के रिक्त पदों पर भर्ती का अनुश्रवण।
5. कृषि विश्वविद्यालयों के विधिक वादों तथा मा. न्यायालय के आदेशों का समय से अनुपालन सुनिश्चित किये जाने का अनुश्रवण।
6. विधिक वादों में शासन की ओर से पैरवी एवं प्रतिशपथ पत्र दाखिल किये जाने में सहयोग किया जाना।
7. आर.के.वी.वाई. की सभी योजनाओं की समीक्षा एवं प्रगति रिपोर्ट निदेशक, कृषि विभाग, उ.प्र. तथा शासन के सम्बन्धित अधिष्ठान अनुभाग को प्रस्तुत किया जाना।

उपकार नोडल एजेन्सी के रुप में उपरोक्तानुसार दायित्वों का निर्वहन कर रही है।

परियोजनाओं के मूल्यांकन हेतु परीक्षण समिति की बैठकें सम्पन्न

रिवाल्विंग फण्ड के अन्तर्गत प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों/अन्य कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान से जुड़े राज्य की संस्थाओं से प्राप्त 32 विस्तृत शोध प्रस्तावों का विषय विशेषज्ञों से मूल्यांकन कराये जाने के पश्चात प्राप्त

सुझावों के अनुसार संशोधित परियोजना प्रस्तावों का प्रस्तुतिकरण संबंधित मुख्य अन्वेषकों द्वारा महानिदेशक, उपकार की अध्यक्षता में गठित परीक्षण समिति की 14, 15 व 16 मार्च, 2022 को विषयवार आहूत बैठकों में किया गया, जिसमें 21 परियोजना प्रस्तावों को अपेक्षित संशोधनोपरान्त अनुमोदन समिति की दसवीं बैठक में अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किये जाने हेतु संस्तुत किया गया।

परीक्षण समिति की बैठक की अध्यक्षता करते महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

अनुमोदन समिति की बैठकें सम्पन्न

उपकार को उ.प्र. राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद द्वारा उपलब्ध कराई गई रू. 10.00 करोड़ की धनराशि एवं उससे अर्जित ब्याज के संकलित योग के सापेक्ष प्रस्तावित योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन की अध्यक्षता में गठित अनुमोदन समिति की 18 अप्रैल, 2022 को सम्पन्न दसवीं बैठक व तत्क्रम में 25 जुलाई, 2022 को सम्पन्न ग्यारहवीं बैठक में प्रदेश की चिन्हित शोध प्राथमिकताओं के अन्तर्गत विभिन्न विषयों यथा फसल उन्नयन, प्राकृतिक संसाधन प्रबन्ध एवं अभियांत्रिकी, कृषि रक्षा, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य तथा कृषि

अनुमोदन समिति बैठक की अध्यक्षता करते हुए कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन श्री आलोक सिन्हा

अर्थशास्त्र से संबंधित कुल धनराशि रु. 373.98 लाख की निम्नलिखित 16 परियोजनाओं को वित्त पोषण हेतु स्वीकृति प्रदान की गई तथा विभिन्न प्रशासनिक एवं नीतिगत निर्णय लिये गये। उल्लेखनीय है कि अनुमोदन समिति की ग्यारहवीं बैठक में दिये गये निर्देशों के क्रम में कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, अयोध्या द्वारा "Value chains of major agricultural commodities: A lucrative approach for improving livelihood status of farmer's in Uttar Pradesh" परियोजना कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन के समक्ष 25 अगस्त, 2022 को प्रस्तुत की गई, जिसे सम्यक विचार–विमर्श उपरांत धनराशि रू. 49.96 लाख के बजट के साथ अनुमोदन प्रदान किया गया। सम्प्रति रिवाल्विंग फण्ड से निम्नानुसार स्वीकृत कुल 17 नवीन परियोजनाओं में से 16 परियोजनाएं (कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर की परियोजना को छोड़कर) एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित होने के पश्चात धनराशि अवमुक्त कर प्रारम्भ कराई जा चुकी हैं–

1. Screening and identification of suitable genotype(s) of sesame for water logging conditions. PI: Dr. Vijay Sharma, Assistant Professor, Genetics and Plant Breeding, Banda University of Agriculture & Technology, Banda.
2. Development of ground water recharge system for rejuvenating shallow aquifers in Bundelkhand (U.P.). PI: Dr. Sanjay Kumar, Assistant Professor, Agricultural Engineering, Banda University of Agriculture & Technology, Banda
3. Carbon remobilization trait for yield improvement in crops under water limited environments of Uttar Pradesh. PI: Dr. Karam Husain, Professor, Crop Physiology, Chandra Shekhar Azad University of Agriculture & Technology, Kanpur.
4. Cleaning system for small scale solar PV systems. PI: Dr. P.K. Mishra, Assistant Professor, Agricultural Engineering, ANDUAT Mahamaya College of Agricultural Engineering & Technology, Ambedkar Nagar.
5. Development of low cost value added products from paddy straw to minimize pollution. PI: Dr. Suman Prasad Maurya, Associate Professor, Human Development, Acharya Narendra Deva University of Agriculture &Technology, Ayodhya.
6. Green synthesis of silver nano-formulations using indigenous *Trichoderma* species and their efficacy against seed and soil borne pathogents of pulses in Bundelkhand region of Uttar Pradesh. PI: Dr. Vivek Singh, Assistant Professor, Plant Pathology, Banda University of Agriculture & Technology, Banda.
7. Efficacy of zinc nano-fungicides against different seed-borne mycotic diseases of wheat *(Triticum aestivum)*. PI: Dr. Neelesh Kapoor, Assistant Professor, Plant Biotechnology, Sardar Vallabhbhai Patel University of Agriculture & Technology, Meerut.
8. Management of fruit fly through trap and kill added with repellent in bitter gourd. PI: Dr. Rakesh Pandey, Associate Professor, Entomology, Banda University of Agriculture & Technology, Banda.
9. Boosting feeding value of paddy straw as animal fodder by means of different treatments. PI: Dr. Muneendra Kumar, Assistant Professor, Animal Nutrition, U.P. Pt. Deen Dayal Upadhyay Pashu Chikitsa Vigyan Vishwavidyalaya Evam Go-Ansundhan Sansthan, Mathura.
10. Strategic control of gastrointestinal parasitism and anthelmintic resistance in goats for upliftment of owners. PI: Dr. Jitendra Tiwari, Assistant Professor, Parasitology, U.P. Pt. Deen Dayal Upadhyay Pashu Chikitsa Vigyan Vishwavidyalaya Evam Go-Ansundhan Sansthan, Mathura.
11. Evaluation of acaricide resistance and development of herbal formulations for tick control in large ruminants of western Uttar Pradesh. PI: Dr. Amit Kumar Jaiswal, Assistant Professor, Veterinary Parasitology, U.P. Pt. Deen Dayal Upadhyay Pashu Chikitsa Vigyan Vishwavidyalaya Evam Go-Ansundhan Sansthan, Mathura.
12. Detection of status of acaricide resistance, their mitigation with ethnobotanicals and managemental practices for control of ticks and ticks borne diseases in Eastern U.P. PI: Dr. Amit Singh, Associate Professor & Head, Veterinary Parasitology, Acharya Narendra Deva University of Agriculture & Technology, Ayodhya.
13. Effect of antibiotic and probiotic growth regulators on chicken health and it's role in the dissemination of antibiotic-resistant bacteria through chicken manure and meat. PI: Dr. Vijay Tripathi, Assistant Professor, Molecular & Cellular Engineering, Sam Higginbottom University of Agriculture, Technology & Sciences, Prayagraj
14. Development of cost effective fish feed using unconventional feed ingredients to increase the growth efficiency of fishes like Carps and *Clarias batrachus* using feed additives. PI: Dr. Archana Arya,

Associate Professor, Fisheries, Sardar Vallabhbhai Patel University of Agriculture & Technology, Meerut.

15. Market chain analysis for fodder and green manure crop seeds in the eastern plain zone of U P. PI: Dr. Sarvesh Kumar, Assistant Professor, Agricultural Economics, Shri Durga ji Post Graduate College, Chandeshwar, Azamgarh.
16. Improving livelihood status in eastern Uttar Pradesh through assessment of average farmer's income: An income enhancement approach. PI: Dr. Supriya, Assistant Professor, Agricultural Economics, Acharya Narendra Deva University of Agriculture & Technology, Ayodhya.
17. Value chains of major agricultural commodities: A lucrative approach for improving livelihood status of farmer's in Uttar Pradesh. PI: Dr. Supriya, Assistant Professor, Agricultural Economics, Acharya Narendra Deva University of Agriculture & Technology, Ayodhya.

नेटवर्किंग परियोजना के कार्यकाल में विस्तार

रिवाल्विंग फण्ड से वित्त पोषित नेटवर्किंग परियोजना सेन्टर ऑफ एक्सीलेन्स इन फार्म मशीनरी बाबा साहब डा. भीम राव अम्बेडकर कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, इटावा एवं भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में वर्ष 2017 से संचालित कराई जा रही है।

बाबा साहब डा. भीम राव अम्बेडकर कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, इटावा में इस परियोजना के अन्तर्गत मैनुअली आपरेटेड गार्लिक प्लान्टर, पावर आपरेटेड कार्न शेलर, पावर आपरेटेड पैडी थ्रेशर्स तथा पावर आपरेटेड ग्राउण्डनट डिकार्टिकेटर्स की प्रोटोटाइप्स का विकास करते हुए परीक्षण किया जा रहा है, जबकि भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में इस परियोजना के अन्तर्गत मैनुअल मल्टी क्रॉप प्लान्टर, शुगरकेन स्ट्रीपर–कम–डीटॉपर, सोलर पावर्ड मैनुअल स्प्रेयर, सीड सेट कटिंग मशीन, मैनुअल वीडीसाइड स्प्रेयर तथा पैडल ऑपरेटेड पैडी थ्रेशर की प्रोटोटाइप्स का विकास करते हुए परीक्षण किया जा रहा है।

कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन की अध्यक्षता में आहूत अनुमोदन समिति की दसवीं / ग्यारहवीं बैठक में इस नेटवर्किंग परियोजना के कार्यो की समीक्षा करते हुये कार्यहित में परियोजना के शेष कार्यो तथा प्रस्तावित नवीन कार्यो को पूर्ण करने हेतु केन्द्रवार परियोजना की बचतों से 02 वर्ष हेतु परियोजना के कार्यकाल में विस्तार प्रदान किया गया।

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन फार्म मशीनरी परियोजना की उपलब्धियां

रिवाल्विंग फण्ड से वित्त पोषित यह परियोजना भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ एवं बाबा साहब डा. भीम राव अम्बेडकर कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, इटावा में संचालित कराई गई, जिसमें केन्द्रवार निम्नलिखित यंत्रों के प्रोटोटाइप्स विकसित किये गये हैं–

(अ) भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान

1. **हस्तचालित बहुफसली बुवाई यंत्र (मैनुअल मल्टी क्रॉप प्लांटर):** यह मशीन गन्ने में गेहूं, दलहनी फसलों तथा सरसों की सहफसली बुवाई हेतु उपयुक्त है। इस यंत्र का सफल परीक्षण एवं प्रदर्शन संस्थान के साथ–साथ सीतापुर, लखीमपुर व लखनऊ जनपद के कृषकों के 14 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर किया गया है। यह यंत्र कृषकों को उपलब्ध कराने हेतु संस्थान ने यंत्र निर्माता मै. हेमन्त मैनुफैक्चरिंग स्टोर, बिसवां, सीतापुर के साथ समझौता किया है।

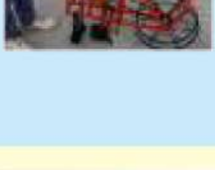

2. **हस्तचालित गन्ना पत्ती छिलाई व अगोला कटाई यंत्र (शुगरकेन स्ट्रीपर–कम–डीटॉपर):** गन्ने के शीर्ष भाग की कटाई तथा सूखी पत्तियों की सफाई हेतु अत्यंत हल्के वजन में इस यंत्र के तीन प्रोटोटाइप तैयार किये गये, जिसमें से कार्य की क्षमता व सुगमता के दृष्टिकोण से एक सर्वश्रेष्ठ यंत्र का चुनाव किया गया।

3. **सौर ऊर्जा संचालित हस्तचालित स्प्रेयर (सोलर पावर्ड मैनुअल स्प्रेयर):** इस यंत्र में स्प्रेयर सोलर चालित है। छिड़काव हेतु इसे फसल की ऊँचाई के अनुरुप एक फीट से एक मीटर की ऊँचाई तक कहीं भी समायोजित किया जा सकता है। इसमें 65 लीटर क्षमता का एक पाइप लगाया गया है, जिसमें रसायनों को भरकर छिड़काव किया जा सकता है अथवा इसका उपयोग एक लम्बी पाइप जोड़कर ड्रम में भरे रसायन के छिड़काव हेतु भी किया जा सकता है। इस यंत्र की प्रभावी चौड़ाई 3.6 मीटर है तथा इसकी कार्यक्षमता 0.52 हेक्टेयर प्रति घंटा है।

4. **हस्तचालित गन्ना बीज कटाई यंत्र (मैनुअल सीड सेट कटिंग मशीन):** इस यंत्र से केननोड, बडचिप तथा गन्ने के टुकड़े काटने का कार्य आवश्यकतानुसार किया जा सकता है ताकि बीज में अनावश्यक रुप से प्रयुक्त हो रहे गन्ने के उपयोग को कम किया जा सके।

5. **फसल सुरक्षा कवच (शील्ड):** इसका निर्माण करके हस्तचालित स्प्रेयर में नॉजेल पर लगाया गया है ताकि रसायनों के छिड़काव के दौरान हवा के बहाव से होने वाली क्षति से बचा जा सके।

6. **पैर चालित धान गहाई यंत्र (पैडल ऑपरेटेड पैडीथ्रेशर):** इस गहाई यंत्र को चलाने के लिये एक व्यक्ति की आवश्यकता होती है। यंत्र की कार्यक्षमता 60–85 किग्रा. प्रति घंटा है। इस यंत्र का सफल परीक्षण एवं प्रदर्शन सीतापुर एवं लखनऊ जनपद में किया गया है। इस यंत्र को परीक्षण हेतु केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मेघालय भी भेजा गया है।

(ब) बाबा साहब डा. भीम राव अम्बेडकर कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय

1. **हस्तचालित लहसुन बुवाई यंत्र (मैनुअल गार्लिक प्लांटर):** इसका विकास लहसुन की पुतियों की लाइन में बुवाई हेतु किया गया है। इस मशीन द्वारा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 14 सेमी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 8 सेमी एवं गहराई 6 सेमी. तक रखी जा सकती है।

2. **मूंगफली छीलक यंत्र (ग्राउन्डनट डिकोर्टिकेटर):** यह यंत्र मूंगफली के छिलके हटाने के काम आता है। इसके संचालन हेतु 02 हार्सपॉवर की विद्युत मोटर की आवश्यकता होती है। इस मशीन के दो मॉडल तैयार किये गये हैं। माडल / मार्क–1

माडल/मार्क-1

में मशीन का समग्र आयाम 762X686X762 मिमी. है। ड्राइविंग पुली का व्यास 64 मिमी. तथा ड्राइवन पुली का व्यास 228 मिमी. है। माडल/मार्क–2 में मशीन का समग्र आयाम 762X686X765 मिमी. है। ड्राइविंग पुली का व्यास 100 मिमी. तथा ड्राइवन पुली का व्यास 400 मिमी. है।

माडल/मार्क-2

3. **मक्के का दाना निकालने का यंत्र (कॉर्न शेलिंग मशीन):** इस यंत्र का उपयोग मक्के के भुट्टों से दानों को अलग करने के लिये किया जाता है। इसके संचालन हेतु 2 हॉर्सपॉवर की विद्युत मोटर की आवश्यकता होती है। इस यंत्र से निकाले गये मक्के के दानों का अंकुरण 90 प्रतिशत तक पाया गया। इस मशीन का समग्र आयाम 1368X541X769 मिमी. है। ड्राइविंग पुली का व्यास 90 मिमी. तथा ड्राइवन पुली का व्यास 228 मिमी. है।

4. **धान गहाई यंत्र (पैडी थ्रेशर):** इस गहाई यंत्र में गहाई के साथ–साथ ओसाई हेतु पंखा भी लगा होता है। इसके संचालन हेतु 2 हार्सपॉवर की विद्युत मोटर की आवश्यकता होती है। यह पोर्टेबिल तथा उच्च थ्रेशिंग क्षमता का यंत्र है। इस मशीन के दो मॉडल तैयार किये गये हैं। माडल/मार्क–1 में मशीन का समग्र आयाम 1130X695X1304 मिमी. है। ड्राइविंग पुली का व्यास 76 मिमी. तथा ड्राइवन पुली का व्यास 203 मिमी. है। माडल/मार्क–2 में मशीन का समग्र आयाम 1240X760X885 मिमी. है। ड्राइविंग पुली का व्यास 102 मिमी. जबकि ड्राइवन पुली का व्यास 254 मिमी. है।

माडल/मार्क-1

माडल/मार्क-2

परियोजनाओं की समीक्षा एवं अनुश्रवण

शोध निधि के अन्तर्गत प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों/शोध संस्थानों में संचालित 30 शोध परियोजनाओं की प्रथम छःमाही की प्रगति की समीक्षा महानिदेशक, उपकार की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा 01 सितम्बर, 2021 को की गई, जिसमें दिये गये निर्देशों के अनुसार कार्यवाही सुनिश्चित की गई। इन परियोजनाओं का स्थलीय भ्रमण कर प्रगति का अनुश्रवण परिषद के वैज्ञानिकों एवं वाह्य विशेषज्ञों द्वारा समन्वित रुप से दिसम्बर, 2021 से जनवरी, 2022 के मध्य किया गया और परियोजना अन्वेषकों को अपेक्षित तकनीकी सुझाव भी दिये गये।

दलहनी फसलों में उकठा रोग प्रबंधन पर भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर में संचालित शोध परियोजना का अनुश्रवण करते संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ वाह्य विशेषज्ञ, सचिव एवं वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार

उपकार द्वारा महानिदेशक की अध्यक्षता में 04–05 अगस्त, 2022 को आहूत दो दिवसीय कार्यशाला तथा 17 अक्टूबर, 2022 को आहूत बैठक में इन परियोजनाओं के द्वितीय वर्ष के कार्यों की समीक्षा की गई तथा मुख्य अन्वेषकों को विभिन्न तकनीकी सुझाव दिये गये। विभिन्न चरणों में समीक्षा उपरान्त असंतोषजनक पाई गई 03 परियोजनाओं को बंद किये जाने की कार्यवाही की गई। सम्प्रति शोध निधि के अधीन विभिन्न विश्वविद्यालयों/शोध संस्थानों में फसल उन्नयन, बागवानी एवं मूल्य संवर्धन, फसल सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं अभियांत्रिकी तथा पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य आदि विषयों पर 27 परियोजनायें संचालित की जा रही हैं, जिनकी समय–समय पर समीक्षा एवं स्थलीय अनुश्रवण किया जा रहा है।

कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

शोध प्राथमिकताओं का चिन्हांकन एवं निर्धारण

शोध सलाहकार समिति द्वारा कृषि एवं तत्संबंधी क्षेत्रों की शोध प्राथमिकताओं के निर्धारण हेतु महानिदेशक, उपकार की अध्यक्षता में गठित समिति की बैठक/कार्यशाला का आयोजन 22 मार्च, 2022 को उपकार में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में श्री अंजनी कुमार सिंह, निदेशक, उत्तर प्रदेश राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस बैठक/कार्यशाला में डा. वी.के. सिंह, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद, डा. हरनाम सिंह, पूर्व अधिष्ठाता, कृषि विश्वविद्यालय, अयोध्या, डा. एच.एन. सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, कृषि अर्थशास्त्र, कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर, डा. घनश्याम पाण्डेय, पूर्व विभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन, भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ, डा. वाई.पी. सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय शोध केन्द्र, लखनऊ, डा. ए.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, डा. आर.पी. मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मेरठ सहित प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रदेश स्थित शोध संस्थानों और उपकार के वैज्ञानिकों तथा कृषि एवं तत्संबंधित विभागों के अधिकारियों एवं विषय विशेषज्ञों ने भाग लिया।

शोध प्राथमिकताओं के चिन्हांकन की बैठक/कार्यशाला में मुख्य अतिथि श्री अंजनी कुमार सिंह, निदेशक, उत्तर प्रदेश राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद तथा कार्यशाला की अध्यक्षता करते महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

बैठक में प्रदेश स्थित कृषि एवं तत्संबंधित विश्वविद्यालयों (राज्य एवं केन्द्रीय), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के प्रदेश स्थित शोध संस्थानों, प्रदेश के कृषि एवं तत्संबंधित विभागों से प्राप्त शोध प्राथमिकताओं का प्रस्तुतिकरण किया गया तथा गहन विचार–विमर्श के उपरान्त उद्यान, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं अभियांत्रिकी, फसल उन्नयन, फसल सुरक्षा एवं उत्पादन, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य, कृषि अर्थशास्त्र, कृषि प्रसार, कृषि शिक्षा, सस्योत्तर प्रबंधन एवं मूल्य संवर्धन और गृह विज्ञान विषयों से संबंधित शोध प्राथमिकताओं को अंतिम रुप दिया गया।

शोध प्राथमिकताओं पर परियोजनाएं आमंत्रित

उपकार ने प्रदेश की कृषि एवं तत्संबंधित विषयों की शोध प्राथमिकताओं का चिन्हांकन एवं निर्धारण बैठक के माध्यम से चिन्हित निम्नलिखित 17 शोध प्राथमिकतायें 10 दिसम्बर, 2022 को विज्ञापित एवं सर्कुलेट कर प्रदेश में स्थित शोध संस्थानों से प्रतिस्पर्द्धात्मक आधार पर शोध प्रस्ताव (सिनाप्सिस) आमंत्रित किये।

1. Adaptive research on canopy management in existing orchards of subtropical fruits for maximum quality production.
2. Development of production protocols and value addition technology for dragon fruit.
3. Management of thermal heat, drought and salinity stress through conservation agriculture in participatory approach.
4. Improvement of short grain aromatic rice landraces of U.P. through conventional and modern approaches.
5. Collection, evaluation and improvement of *Kathia* and other landraces of wheat suited for changing climatic conditions through conventional and modern approaches.
6. Collection, evaluation and improvement of pigeon pea landraces of U.P. for climate resilience.
7. Photosynthetic apparatus and light use efficiency in crop response to climate variations.
8. Devising thrips management protocols in fruit trees with special reference to mango in participatory approach.
9. Management protocols for decline disease of guava caused by *Meloidogyne-Fusarium* complex in participatory approach.
10. Promotion of livestock, sheep and goat based farming system modules in participatory approach.
11. Studying economic impact of technologies for raising agricultural productivity per unit of land.
12. Impact study of various government schemes like; Kisan Samman Nidhi, PM Fasal Beema Yojana, Kisan Credit Card, Millenium Farmers' school etc.
13. Impact assessment of economically viable adopted technologies developed by R&D institutions of U.P.
14. Development of agri-preneurship through incubation and start up in agriculture and allied sectors.
15. Development of protocols for waste utilization through value addition for entrepreneurship and employment generation.
16. Commercially viable new products development to diversify uses and increase the healthy consumption.
17. Development of commercially viable protocols for minimal processing, dehydrated powder, osmo-dehydrated and frozen products from fruits and vegetables.

परिषद में शोध प्रस्ताव (सिनाप्सिस) प्राप्त होने की अंतिम तिथि 17 जनवरी, 2023 है। इस संदर्भ में विस्तृत सूचना उपकार की वेबसाइट www.upcaronline.org पर उपलब्ध है।

काला नमक चावल अनुसंधान परियोजना

राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद, उत्तर प्रदेश की अपेक्षा के क्रम में काला नमक चावल को निर्यातोन्मुखी बनाये जाने के दृष्टिकोण से "Genetic Improvement of Kalanamak for productivity traits, biotic and abiotic stress tolerance, aroma and nutritional quality" विषयक 03 वर्षीय कुल धनराशि रु. 102.16 लाख की परियोजना 05 केन्द्रों (भा.कृ. अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, आ.न.दे. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय फसल अनुसंधान केन्द्र, अयोध्या तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, सिद्धार्थनगर, देवरिया एवं गोरखपुर) पर संचालित कराई जा रही है। इस हेतु धनराशि रु. 50 लाख की वित्तीय सहायता राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद द्वारा उपलब्ध कराई गई है। इस परियोजना की समय–समय पर समीक्षा एवं स्थलीय अनुश्रवण किया जा रहा है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, सिद्धार्थनगर में काला नमक की प्रजाति के उपयुक्तता परीक्षण का अनुश्रवण करते हुए महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञ

इस परियोजना में शीघ्र परिपक्वता, कम ऊंचाई एवं उच्च उत्पादकता देने वाली 10 ऐसी लाइनें विकसित की गई हैं, जिनमें झुलसा के प्रति अवरोधी जीन सफलतापूर्वक स्थापित किया गया है। इन 10 लाइनों का केएन–3 चेक प्रजाति के साथ उपयुक्तता परीक्षण उत्तर प्रदेश के काला नमक जी.आई. क्षेत्र के जनपदों यथा सिद्धार्थनगर, देवरिया, गोरखपुर, कुशीनगर, गोण्डा, संतकबीर नगर, गोरखपुर, महराजगंज तथा बस्ती के कृषि विज्ञान केन्द्रों पर सम्पन्न कराया गया है, जिसमें विकसित लाइनों की पैदावार चेक प्रजाति से अधिक तथा पौधों की ऊंचाई चेक प्रजाति (161 सेमी) से काफी कम (110 सेमी) पाई गई है। यह लाइनें केएन–3 चेक प्रजाति की तुलना में लगभग एक सप्ताह पूर्व परिपक्व हो जाती हैं। परियोजना में विकसित सर्वोत्तम 02 लाइनों (एएसजीएसटी–34 तथा पूसा एसएल–03) में सुगन्ध के परिप्रेक्ष्य में 2 एपी की मात्रा क्रमशः 281.07 तथा 235.65 पीपीवी पाई गई जो केएन–03 चेक प्रजाति की तुलना में लगभग सात गुना अधिक है। इस परियोजना के प्रथम दृष्टया परिणाम काफी उत्साहवर्धक पाये गये हैं।

नवीन शोध प्रस्ताव

प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि उत्पादक संगठनों तथा कृषकों की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिये परिषद द्वारा निम्नलिखित शोध परियोजना प्रस्ताव तैयार कर वित्त पोषण हेतु विभिन्न संस्थाओं को प्रेषित किये गये –

क्रम सं.	परियोजना का शीर्षक
1.	Establishment of nutrimillet hub for food and nutritional security in Bundelkhand and Vindhyan region of Uttar Pradesh

क्रम सं.	परियोजना का शीर्षक
2.	Upliftment of livelihood and nutritional security of farming community of Bundelkhand and Vindhyan regions through introduction and promotion of woody perennials and nutritional crops
3.	Strengthening oilseed production programme in Uttar Pradesh by adopting advanced technologies and fulfilling research gaps for self sustaining in oilseed production
4.	Quality seed production for enhancing seed replacement rate and farmers income in Uttar Pradesh through KVKs and FPOs
5.	Human resource planning and management of integrated farming system for livelihood security and capacity building to scheduled caste and scheduled tribe community in Uttar Pradesh
6.	Strengthening pulse production programme in Uttar Pradesh with improved cultivars, quality seed and fulfilling research gaps
7.	Genetic improvement and dissemination of wheat varieties for climate resilience to increase farmer's income of Uttar Pradesh
8.	Development and promotion of short grain scented rices for enhancing income of farmers' in Uttar Pradesh
9.	Establishment of Model Genome Club in U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow
10.	Rehabilitation of aonla industry in Uttar Pradesh for health and prosperity
11.	Improving farmers' income, enhancing nutritional security and entrepreneurship development through introduction of quinoa in Bundelkhand and Vindhyan region of Uttar Pradesh
12.	Collection, evaluation, identification and development of superior genotypes of *Cannabis sativa* L. with low THC (Tetrahydrocannabinol) content through conventional and modern approaches for industrial and medical purposes
13.	Establishment of herbal gardens in 100 resident welfare associations (RWAs) and 100 schools/colleges in Lucknow and Gorakhpur districts of Uttar Pradesh state (raising 20 aushadhi jadi buti plant species)
14.	Bamboo based rural entrepreneurship development through FPCs/FPOs in Uttar Pradesh

नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में गठित उच्च स्तरीय समिति की बैठक सम्पन्न

नई शिक्षा नीति 2020 में कृषि, कृषि शिक्षा से संबंधित बिन्दुओं के विषयगत राज्य में की जाने वाली कार्यवाही के संबंध में सुझाव/संस्तुति/रिपोर्ट प्रस्तुत किये जाने हेतु कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान अनुभाग, उ.प्र. शासन के कार्यालय ज्ञाप संख्या 2170530/2022–कृशिअ–67–1099/36/2022, दिनांक 02 अगस्त, 2022 के द्वारा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, अयोध्या, मेरठ एवं बांदा के कुलपतियों को सम्मिलित करते हुए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया गया है, जिसके सदस्य संयोजक महानिदेशक, उपकार हैं। इस समिति की बैठक 24 अगस्त, 2022 को उपकार में सम्पन्न हुई, जिसमें विभिन्न विषयों यथा – (1) कृषि विश्वविद्यालयों में एग्रीकल्चर इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित किया जाना, (2) एक वर्ष पूर्ण करने पर सर्टीफिकेट एवं 2 वर्ष पूर्ण करने पर डिप्लोमा दिये जाने का प्रावधान, (3) कृषि क्षेत्र में मांग एवं उपलब्धता की कमी के दृष्टिगत छात्र प्रवेश संख्या में वृद्धि विषयक कार्ययोजना, (4) कृषि शिक्षा क्षेत्र में इक्विटी, क्वालिटी, एक्सेस, एफोर्डेबिलिटी व एकाउंटबिलिटी, (5) कृषि क्षेत्र में वैकल्पिक रुप से ऑफलाइन/ऑनलाइन कोर्स, (6) कृषि कानून, कृषि पत्रकारिता, कारपोरेट कम्युनिकेशन, सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट, ग्रामीण विकास पर नये कोर्स, (7) लोक नृत्य एवं लोक गीत पर भी कोर्स चलाकर शिक्षण, (8) विदेशी विश्वविद्यालयों से सहयोग, 15 प्रतिशत छात्र/छात्राओं का आदान–प्रदान किया जाना, (9) डुअल डिग्री प्रोग्राम, (10) मार्क ओरएंटेड के साथ–साथ 30 प्रतिशत स्किल डेवलपमेंट आधारित कोर्स। 20 प्रतिशत कोर्स को क्षेत्र की आवश्यकतानुसार संशोधित किया जाना एवं (11) क्वालिटी प्रॉसेस को कोर्स में समाहित किये जाने के साथ–साथ अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर सम्यक विचार–विमर्श उपरांत सुझाव/संस्तुतियां शासन को प्रेषित की गईं।

नई शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में उच्च स्तरीय समिति की बैठक में विचार-विमर्श करते हुए राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, महानिदेशक, उपकार एवं अन्य वैज्ञानिकगण

औषधीय कृषि के प्रोत्साहन हेतु बैठक सम्पन्न

कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन के निर्देश के क्रम में औषधीय कृषि से संबंधित शोध, विकास एवं व्यवसायिक प्रबंधन तथा एफ.पी.ओ. की सहायता से उसके विस्तार हेतु महानिदेशक, उपकार की अध्यक्षता में गठित समिति की प्रथम बैठक 21 अप्रैल, 2022 को आहूत की गई, जिसमें प्रदेश में कैनाबिस पौधों की विविधता एवं उनके औषधीय गुणों में सुधार तथा बीज उपलब्धता से संबंधित परियोजना, प्रदेश में आंवले की बागवानी में आने वाली समस्यायें और उनके समाधान, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन तथा प्रतापगढ़ आंवला को भौगोलिक संकेतांक अन्तर्गत संरक्षण, चयनित कृषि विज्ञान केन्द्रों पर औषधीय पौधों की पौधशाला की स्थापना, किनोवा, गेहूं, जौं, सुगंधित तथा लाल एवं काला चावल और गन्ना फसल में औषधीय गुणों के परिप्रेक्ष्य में फसल सुधार एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रमों सहित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर कार्यवाही के निर्देश हुए, जिसका अनुपालन सुनिश्चित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों पर पौधशाला की स्थापना

प्रदेश के 12 कृषि विज्ञान केन्द्रों/कृषि विकास केन्द्र (झांसी, हमीरपुर, ललितपुर, महोबा, जालौन, बांदा, प्रयागराज, अयोध्या, बहराइच, रायबरेली, सीतापुर एवं लखनऊ) पर एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में औषधीय एवं सगंध पौधों की पौधशाला की स्थापना हेतु कुल धनराशि रु. 154.00 लाख के प्रस्ताव राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली को प्रेषित किये गये हैं, जिनके स्वीकृति की कार्यवाही प्रचलन में है।

उत्तर प्रदेश में कृषि सुदृढ़ीकरण हेतु योजना स्वीकृत

उत्तर प्रदेश में कृषि सुदृढ़ीकरण हेतु प्रदेश के समस्त कृषि विश्वविद्यालयों, भारत सरकार के शोध संस्थानों तथा अन्तर्राष्ट्रीय कृषि शोध संस्थानों द्वारा विभिन्न फसलों एवं पशुधन क्षेत्र में विकसित तकनीकों के समन्वयन पर आधारित "Intervention of improved agricultural technologies for transforming agriculture in Uttar Pradesh for enhancing farmer's income" योजना कृषि अनुभाग–3 के शासनादेश संख्या 335/12–3–2020, दिनांक 17 मार्च, 2020 के द्वारा 04 वर्षों हेतु धनराशि रुपया 5222.76 लाख के प्रावधान के साथ स्वीकृत की गई है, जिसके क्रम में शासनादेश संख्या 932/12–3–2021–100 (42)/2020, दिनॉक 08 नवम्बर, 2021 द्वारा धनराशि रु. 11.047 करोड़ प्रथम किस्त के रूप में उपकार को आबंटित की गई परन्तु वित्तीय वर्ष के अंतिम दिवस पर धनराशि प्राप्त होने के कारण यह व्यय नहीं की जा सकी तथा इसके वित्तीय वर्ष 2022–23 में व्यय की अनुमति हेतु शासन से अनुरोध किया गया, जिसकी अनुमति प्राप्त न होने के कारण शासन के निर्देशानुसार इस धनराशि का समर्पण किया गया और संदर्भित योजना में कतिपय संशोधनों के साथ परियोजना की धनराशि पुनः अवमुक्त किये जाने का अनुरोध शासन से किया गया है ताकि इस परियोजना का क्रियान्वयन सुनिश्चित कराया जा सके।

मौसम आधारित कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वाच ग्रुप) के संचालन हेतु कार्ययोजना अनुमोदित

महानिदेशक, उपकार की अध्यक्षता में गठित राज्य स्तरीय मौसम आधारित कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) के संचालन हेतु आत्मा परियोजना के इनोवेटिव कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन की अध्यक्षता में गठित राज्य स्तरीय अन्तर्विभागीय कार्यकारी दल की 28 दिसम्बर, 2021 को सम्पन्न बैठक में क्रॉप वेदर वाच ग्रुप के 3 वर्षों के क्रियाकलापों हेतु धनराशि रू. 53.55 लाख की कार्ययोजना को अनुमोदन प्रदान किया गया। कार्ययोजना हेतु स्वीकृत धनराशि प्राप्त होते ही उपकार में ग्रुप की बैठकें आयोजित कर मौसम आधारित कृषि परामर्श समूह की संस्तुतियां प्रदेश के कृषकों के उपयोगार्थ उपलब्ध कराई जायेंगी।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अन्तर्गत परियोजनाओं का थर्ड पार्टी मूल्यांकन

कृषि निदेशक के पत्रांक रा.कृ.वि.यो./571/16–थ.पा.मू./2021–22, दिनांक 13 दिसम्बर, 2021 द्वारा प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थाओं में वर्ष 2017–18 से 2020–21 तक संचालित परियोजनाओं के थर्ड पार्टी मूल्यांकन का कार्य उपकार को सौंपते हुए प्रस्ताव उपलब्ध कराने की अपेक्षा की गई है, जिसके क्रम में उपकार द्वारा कृषि निदेशालय को प्रस्ताव उपलब्ध करा दिया गया है।

संकर प्रजातियों का बहु–स्थानीय परीक्षण परिणाम

संकर मक्का: निजी क्षेत्र की बीज कम्पनियों के संकर मक्का प्रजातियों का परीक्षण कार्यक्रम प्रदेश के 07 केन्द्रों पर खरीफ में आयोजित कराया गया। परीक्षण में कुल 05 कम्पनियों की 09 प्रजातियॉ एवं 01 प्रजाति चेक के रूप में शामिल की गयी। दो वर्षों (वर्ष 2019–20 एवं 2020–21) के परीक्षण ऑकड़ों के विश्लेषण उपरान्त उपज के आधार पर निम्नानुसार प्रजातियॉ उपयुक्त पाई गयीं –

क्र. सं.	कम्पनी	संकर	औसत उपज (कुं./हे.)	श्रेणी
1.	श्रीराम बायोसीड जेनेटिक्स	बायोसीड–9544	52.37	प्रथम
2.	पीएचआई सीड्स	पी–3302	52.17	द्वितीय
3.	मेटाहेलिक्स लाइफ साइंसेस	एमएम–9333	50.22	तृतीय
4.	हाईटेक सीड्स प्रा.लि.	एचटी–519607	49.98	चतुर्थ
5.	मेटाहेलिक्स लाइफ साइंसेस	एमएम–9366	49.51	पंचम

संकर चावल: निजी क्षेत्र की बीज कम्पनियों के संकर चावल प्रजातियों का परीक्षण कार्यक्रम भी प्रदेश के 15 केन्द्रों पर आयोजित कराया गया। परीक्षण में कुल 12 कम्पनियों की 20 प्रजातियॉ एवं 02 प्रजातियां चेक के रुप में शामिल की गई। दो वर्षों (वर्ष 2019–20 एवं 2020–21) के परीक्षण आंकड़ों के विश्लेषण उपरान्त उपज के आधार पर विभिन्न परिपक्वता समूह की निम्नानुसार प्रजातियॉ उपयुक्त पाई गयीं–

जीनोटाइप्स	कम्पनी	औसत उपज (कुं./हे.)
अ–अगेती		
एमआर–8655	मेटाहेलिक्स लाइफ साइंसेस	48.93
ब–मध्य		
एलपी–17304	लांगपिंग इण्डिया सीड आर एंड डी सेन्टर प्रा.लि.	55.35
एसएचएक्स–015	सवाना सीड्स प्रा. लि.	55.10
टीएमआरएच–124	त्रिमूर्ति प्लान्ट साइंसेस	54.37
एमआर–8333	मेटाहेलिक्स लाइफ साइंसेस	53.20
एमआर–8222		52.86
स–विलंब		
एमआर–8666	मेटाहेलिक्स लाइफ साइंसेस	50.01
आरआरएक्स–5017	राशी सीड प्रा. लि.	49.32

संकर सरसों: निजी क्षेत्र की बीज कम्पनियों की सरसों की प्रजातियों/जीनोटाइप्स का परीक्षण कार्यक्रम प्रदेश के 05 केन्द्रों पर आयोजित कराया गया। परीक्षण में कुल 02 कंपनियों की 03 प्रजातियां एवं 01 प्रजाति चेक के रुप में शामिल की गई। दो वर्षों (वर्ष 2019–20 एवं 2020–21) के परीक्षण आंकड़ों के विश्लेषण उपरान्त उपज के आधार पर 45एस–46 प्रजाति/जीनोटाइप (पी.एच.आई. सीड्स प्रा. लि.) सर्वाधिक उपयुक्त पाई गयी, जिसकी औसत उपज 17.57 कुन्तल/हेक्टेयर प्राप्त हुई।

संकर प्रजातियों का बहु–स्थानीय परीक्षण कार्यक्रम

संकर चावल : वर्ष 2022 (खरीफ) में 15 निजी बीज कंपनियों के संकर

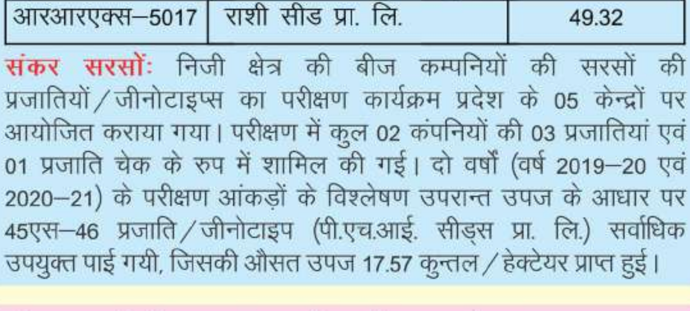

संभागीय कृषि परीक्षण एवं प्रदर्शन केन्द्र, बाराबंकी में संकर चावल के परीक्षण कार्यक्रम का अनुश्रवण करते केन्द्र के वैज्ञानिकों के साथ महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार

चावल की 43 प्रजातियों एवं 02 चेक प्रजातियों का बहुस्थानीय परीक्षण कार्यक्रम प्रदेश के कृषि एवं अन्य विश्वविद्यालयों के 07 प्रक्षेत्रों (बिजनौर, अलीगढ़, कानपुर नगर, प्रयागराज, महराजगंज, अयोध्या एवं वाराणसी) तथा कृषि विभाग के 08 सम्भागीय कृषि परीक्षण एवं प्रदर्शन केन्द्रों (मेरठ, बरेली, मथुरा, अलीगढ़, हरदोई, इटावा, आजमगढ़ एवं बाराबंकी) पर क्रियान्वित कराया गया है। परीक्षण परिणामों के विश्लेषण का कार्य प्रगति में है।

संकर मक्का : वर्ष 2022 (खरीफ) में 07 निजी बीज कंपनियों के संकर मक्का की 17 प्रजातियों एवं 01 चेक प्रजाति का बहुस्थानीय परीक्षण कार्यक्रम प्रदेश के कृषि एवं अन्य विश्वविद्यालयों के 05 प्रक्षेत्रों (अलीगढ़, कानपुर नगर, प्रयागराज, बहराइच एवं वाराणसी) तथा कृषि विभाग के 02 सम्भागीय कृषि परीक्षण एवं प्रदर्शन केन्द्रों (मेरठ एवं बरेली) पर क्रियान्वित कराया गया है। परीक्षण परिणामों के विश्लेषण का कार्य प्रगति में है।

मक्के की संकर प्रजाति परीक्षण कार्यक्रम का अनुश्रवण करते हुए फसल अनुसंधान केन्द्र, बहराइच के प्रभारी एवं अन्य विशेषज्ञों के साथ उपमहानिदेशक, उपकार

संकर बाजरा : वर्ष 2022 (खरीफ) में 04 निजी बीज कंपनियों के संकर बाजरा की 04 प्रजातियों एवं 1 चेक प्रजाति का बहुस्थानीय परीक्षण कार्यक्रम प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालय के 01 प्रक्षेत्र (अलीगढ़) तथा कृषि विभाग के 01 सम्भागीय कृषि परीक्षण एवं प्रदर्शन केन्द्र (मथुरा) पर क्रियान्वित कराया गया है।

फसल अनुसंधान केन्द्र, अलीगढ़ में बाजरे की संकर प्रजाति परीक्षण कार्यक्रम का अनुश्रवण करते हुए उपकार के वैज्ञानिक अधिकारियों के साथ केन्द्र के वैज्ञानिक

संकर सरसों : वर्ष 2022–23 (रबी) में 08 निजी बीज कंपनियों के संकर सरसों की 13 प्रजातियों एवं 01 चेक प्रजाति का बहुस्थानीय परीक्षण कार्यक्रम प्रदेश के कृषि एवं अन्य विश्वविद्यालयों के 05 (अलीगढ़, प्रयागराज, अयोध्या, वाराणसी एवं लखनऊ) प्रक्षेत्रों तथा कृषि विभाग के 02 सम्भागीय कृषि परीक्षण एवं प्रदर्शन केन्द्रों (आजमगढ़ एवं इटावा) पर क्रियान्वित कराया जा रहा है।

निजी क्षेत्र द्वारा विकसित सरसों की प्रजातियों के मूल्यांकन कार्यक्रम का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रक्षेत्र पर निरीक्षण करते महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार तथा संबंधित संस्थान के वैज्ञानिकगण

डायरेक्ट सीडेड राईस (डी.एस.आर.) तकनीक का परीक्षण

डायरेक्ट सीडेड राईस (डी.एस.आर.) तकनीक के परीक्षण के संदर्भ में 07 जून, 2022 को उपकार में महानिदेशक की अध्यक्षता में एक कार्यशाला / बैठक सम्पन्न हुई, जिसमें सीधे बुवाई के माध्यम से चावल की खेती की आवश्यकता, इसके लाभ तथा डी.एस.आर. में आने वाली विशिष्ट समस्याओं पर चर्चा करते हुए प्रदेश में इस तकनीक का परीक्षण कराये जाने का निर्णय लिया गया। परीक्षण कार्यक्रम में बुवाई के समय खेत की स्थिति, खेत में नमी की मात्रा, बुवाई हेतु ट्रैक्चर चालित सीडर मशीन का उपयोग, उर्वरक उपयोग, खरपतवार एवं जल निकास का समुचित प्रबंध किये जाने के विशिष्ट निर्देश दिये गये। यह परीक्षण कार्यक्रम 6 कृषि विज्ञान केन्द्रों (मऊ, बस्ती, लखीमपुर खीरी, प्रयागराज, गोरखपुर एवं सीतापुर) पर आयोजित कराये गये, जिनका फसल मौसम में स्थलीय अनुश्रवण भी किया गया। परीक्षण परिणामों के विश्लेषण का कार्य प्रगति में है।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लखीमपुर खीरी में धान की सीधी बुवाई पर कराये जा रहे परीक्षण का अनुश्रवण करते केन्द्र के विशेषज्ञों के साथ महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार

कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान का विभागीय आय–व्ययक

कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग हेतु वर्ष 2022–23 के आय–व्ययक (राजस्व मद एवं पूंजीगत मद) के अनुमान हेतु प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के परीक्षणोपरांत संकलित प्रस्ताव तैयार कर शासन को प्रेषित किया गया।

कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार का कार्यपूर्ति दिग्दर्शक

वित्तीय वर्ष 2022–23 के लिये कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार का कार्यपूर्ति दिग्दर्शक तैयार कर कृषि विभाग को प्रेषित किया। इस कार्यपूर्ति दिग्दर्शक में प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों एवं उपकार की वर्ष 2021–22 की उपलब्धियों, बजट प्रावधान, महत्वपूर्ण योजनाओं तथा वर्ष 2022–23 हेतु भावी कार्यक्रमों को सम्मिलित किया गया।

उपकार की समीक्षा बैठकें सम्पन्न

कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन की अध्यक्षता में उपकार की समीक्षा बैठकें 01 दिसम्बर, 2021 एवं 31 मार्च, 2022 को आहूत की गई, जिसमें विभिन्न नीतिगत निर्णयों के साथ–साथ उपकार द्वारा आर.के.वी. वाई. से वित्त पोषण हेतु प्रेषित विभिन्न परियोजना प्रस्तावों पर विस्तृत विचार–विमर्श उपरांत इन प्रस्तावों को संशोधित करते हुए कृषि विभाग को उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गये, जिसका अनुपालन सुनिश्चित किया गया।

उपकार की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते
कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन श्री आलोक सिन्हा

प्रबन्ध समिति की बैठक सम्पन्न

उपकार की प्रबंध समिति की 44वीं बैठक 06 अप्रैल, 2021 को माननीय अध्यक्ष, उपकार कैप्टन (से.नि.) विकास गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें उपकार द्वारा किये जा रहे कार्यकलापों एवं प्रगति की समीक्षा करते हुए विभिन्न नीतिगत निर्णय लिये गये।

उपकार की प्रबंध समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए
माननीय अध्यक्ष, उपकार कैप्टन (से.नि.) विकास गुप्ता

उपकार के स्वतंत्र कार्यालय भवन का निर्माण

वर्ष 2015 में उपकार के नवीन कार्यालय भवन के निर्माण हेतु शासन द्वारा धनराशि रु. 13.7595 करोड़ की स्वीकृति प्रदान की गई। शासन द्वारा स्वीकृत लागत के सापेक्ष 13.07 करोड़ अवमुक्त किये गये जिससे 83 प्रतिशत भवन निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है। अवशेष निर्माण कार्यों को पूर्ण किये जाने हेतु कार्यदाई संस्था (उ.प्र. राजकीय निर्माण निगम लि.) द्वारा रु. 585.69 लाख की लागत वृद्धि का पुनरीक्षित आगणन प्रस्तुत किया गया। पुनरीक्षित आगणन के सापेक्ष वित्तीय वर्ष 2022–23 में रु. 313.28 लाख का प्रावधान किया गया, जिसके सापेक्ष रु. 154.37 लाख शासन द्वारा अवमुक्त किया जा चुका है।

महानिदेशक द्वारा अनुसंधान केन्द्रों / कृषि विश्वविद्यालयों / कृषि संस्थानों / कृषि विज्ञान केन्द्रों का भ्रमण

- महानिदेशक, उपकार द्वारा वाराणसी में स्थापित आई.आर.आर.आई. के साउथ एशिया रीजनल सेंटर का भ्रमण 17 दिसम्बर, 2021 तथा 22 एवं 23 सितम्बर, 2022 को किया गया। केन्द्र पर निदेशक एवं उनकी टीम से सुगंधित चावल की प्रजातियों के संकलन एवं

आई.आर.आर.आई. के वाराणसी स्थित केन्द्र पर विशेषज्ञों के साथ काला नमक चावल पर हो रहे अनुसंधान कार्यों का अवलोकन करते महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार

शुद्धीकरण पर परियोजना तैयार किये जाने के संदर्भ मे विस्तार से चर्चा की गई तथा केन्द्र पर संचालित विभिन्न तकनीकी गतिविधियों यथा प्रयोगात्मक प्रक्षेत्रों, फार्म मशीनरी से संबंधित आधुनिक यंत्रों के

आई.आर.आर.आई. के वाराणसी स्थित केन्द्र पर विशेषज्ञों के साथ स्पीड ब्रीडिंग सेंटर के कार्यों का अवलोकन करते महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार

हब तथा स्पीड ब्रीडिंग सेंटर का अवलोकन किया गया। केन्द्र पर काला नमक चावल की गुणवत्ता पर किये जा रहे अनुसंधान कार्यों की विवेचना करते हुए महानिदेशक ने बर्डपुर (सिद्धार्थनगर) से और एक्सेशन संकलित किये जाने पर बल देते हुए वहां के जल एवं मृदा के नमूनों का विश्लेषण भी किये जाने की सलाह दी। साथ ही चावल की अन्य परम्परागत सुगंधित किस्मों पर भी अनुसंधान किये जाने की अपेक्षा की तथा केन्द्र द्वारा चावल पर किये जा रहे अनुसंधान कार्यों की सराहना की।

- महानिदेशक, उपकार द्वारा प्रदेश में स्थापित कृषि विज्ञान केन्द्रों पर उपकार द्वारा संचालित कराये जा रहे एवं अन्य परीक्षण एवं प्रसार कार्यों के अनुश्रवण हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र, सीतापुर–1 एवं

कृषि विज्ञान केन्द्र, कटिया, सीतापुर के विशेषज्ञों के साथ चावल फसल कैफेटेरिया का अवलोकन करते महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार

सीतापुर–2, लखीमपुर खीरी–1, बहराइच–1 एवं बहराइच–2, बस्ती, महराजगंज, सिद्धार्थनगर, आजमगढ–1 एवं आजमगढ़–2, अयोध्या, गोरखपुर–1 एवं गोरखपुर–2, बाराबंकी, रायबरेली–1 एवं रायबरेली–2 तथा मऊ का भ्रमण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों पर डीएसआर पर आयोजित परीक्षण कार्यक्रम के अनुश्रवण के साथ ही चावल फसल कैफेटेरिया, प्राकृतिक खेती, आई.एफ.एस. माडल, मूंगफली की किस्मों का परीक्षण, आईपीएम, पशुपालन, बकरी पालन, बटेर पालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, अजोला उत्पादन, वर्मी कम्पोस्टिंग एवं नाडेप कम्पोस्ट इकाईयों, फलों के मातृ खण्ड आदि का अवलोकन कर विभिन्न विशेषज्ञों से चर्चा की गई तथा आवश्यक दिशा–निर्देश दिये गये।

- भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ द्वारा 28 जून, 2022 को आयोजित आम मेला 2022 में महानिदेशक, उपकार द्वारा प्रतिभाग किया गया एवं तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की गई। कार्यक्रम में संस्थान के साथ प्रदेश के विभिन्न विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, किसान उत्पादक संगठनों, कृषकों, निजी संस्थाओं एवं उद्यमियों द्वारा भाग लिया गया। कार्यक्रम में आम की विभिन्न प्रजातियों की प्रदर्शनी के अतिरिक्त आम की तुड़ाई उपरांत प्रबंधन, मूल्य संवर्धन और विपणन विषय पर किसान गोष्ठी तथा किसान–वैज्ञानिक परिचर्चा भी आयोजित की गई।

आम मेला में महानिदेशक, उपकार को स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत करते हुए संस्थान की निदेशक डा. नीलिमा गर्ग

- उत्तर प्रदेश पं. दीन दयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, मथुरा में 08 अगस्त, 2022 को आयोजित प्रसार सलाहकार समिति की बैठक में महानिदेशक, उपकार द्वारा प्रतिभाग किया गया। बैठक में पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा अद्यतन विकसित की गई तकनीकों, उनसे लाभान्वित कृषकों/पशुपालकों का मूल्यांकन, भविष्य की योजना, नीति निर्धारण तथा अन्य बिंदुओं पर विचार–विमर्श किया गया।

कुलपति, पं. दीन दयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, मथुरा की अध्यक्षता में आहूत प्रसार सलाहकार समिति की बैठक में प्रतिभाग करते हुए महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह व अन्य

- कमला नेहरु इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंस, सुल्तानपुर में शिक्षक दिवस के अवसर पर 05 सितम्बर, 2022 को "उत्तर प्रदेश में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका तथा शोध में सरकार का उत्तरदायित्व" विषय पर आयोजित संगोष्ठी में महानिदेशक, उपकार द्वारा प्रतिभाग किया गया तथा गेस्ट स्पीकर के रुप में व्याख्यान दिया गया।

कमला नेहरु इंस्टीट्यूट में आयोजित संगोष्ठी में व्याख्यान देते हुए महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

- भा.कृ.अनु.प.–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग संस्थान, कानपुर तथा सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा 10 सितम्बर, 2022 को कृषि विश्वविद्यालय, मेरठ में आयोजित 29वीं वार्षिक क्षेत्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र की कार्यशाला में महानिदेशक, उपकार द्वारा विशिष्ट अतिथि के रुप में प्रतिभाग किया गया। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. एवं विशिष्ट अतिथि सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली थे।

कार्यशाला में महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह का स्वागत करते हुए निदेशक प्रसार, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ

- महानिदेशक, उपकार द्वारा 11 सितम्बर, 2022 को केन्द्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ का भ्रमण किया गया तथा संस्थान द्वारा किये

गोवंश संस्थान के वैज्ञानिकों से चर्चा करते हुए महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

जा रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों पर चर्चा की गई तथा सीमेन बनाने की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त की गई। इस अवसर पर महानिदेशक द्वारा संस्थान के परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया।

- महानिदेशक, उपकार द्वारा 21 सितम्बर, 2022 को कृषि महाविद्यालय, कोटवा, आजमगढ़ का भ्रमण कर महाविद्यालय में तैनात सहायक एवं सह प्राध्यापकों से उनके द्वारा किये जा रहे अध्यापन कार्यों पर चर्चा की गई। महानिदेशक, उपकार ने कृषि शिक्षा को और बेहतर एवं आकर्षक बनाने हेतु शिक्षकों को प्रेरित किया तथा सभी शिक्षकों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने के साथ ही शोध करने के लिये प्रोत्साहित किया और नई शिक्षा नीति को अमल में लाने पर बल दिया। महानिदेशक द्वारा महाविद्यालय का भ्रमण कर कम्प्यूटर लैब, वर्मी कम्पोस्ट यूनिट, पौधशाला एवं मोटे अनाज के प्रखण्डों का भी अवलोकन किया गया। महाविद्यालय के सह अधिष्ठाता द्वारा कृषि महाविद्यालय की उपलब्धियों एवं समस्याओं पर चर्चा करते हुए कृषि महाविद्यालय को अध्यापन कार्य, खेलकूद हेतु प्ले ग्राउण्ड तथा प्रशासनिक मान्यता हेतु भूमि उपलब्ध कराने का ज्ञापन भी महानिदेशक, उपकार को सौंपा गया।

कृषि महाविद्यालय, कोटवा, आजमगढ़ में शिक्षकों से विचार-विमर्श करते महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार

- दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कृषि एवं प्राकृतिक विज्ञान संस्थान में कन्सोर्टियम ऑफ इंटरनेशनल एग्रीकल्चर रिसर्च सेंटर की स्थापना का निर्णय लिया गया है। इस संबंध में विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राजेश सिंह की अध्यक्षता में एक बैठक 23 नवंबर, 2022 को सम्पन्न हुई, जिसमें डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, डा. विकास सिंह, रीजनल ब्रीडिंग लीड (साउथ एशिया), ईरी, डा. बी.एस. विवेक, रीजनल मेज ब्रीडिंग कोआर्डिनेटर (एशिया) एवं प्रधान वैज्ञानिक, सिमिट, डा. पी.एस. जैदी, प्रधान वैज्ञानिक, इक्रिसेट, हैदराबाद, दीन दयाल उपाध्याय कृषि एवं प्राकृतिक विज्ञान संस्थान के निदेशक डा. जी.पी. राव, अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय, प्रोफेसर अजय सिंह एवं अन्य वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस अन्तर्राष्ट्रीय

इंटरनेशनल एग्रीकल्चर रिसर्च सेंटर की स्थापना के संदर्भ में आयोजित बैठक में गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति एवं अन्य वैज्ञानिकों के साथ प्रतिभाग करते महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

कृषि अनुसंधान केन्द्र की स्थापना से पूर्वांचल में गेहूं, मक्का एवं धान के बीजों की विभिन्न किस्मों पर शोध एवं विकास का कार्य होगा, जिससे शोधार्थियों एवं किसानों को लाभ पहुंचेगा।

- भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ द्वारा अमरुद की विकसित तकनीकों के प्रचार–प्रसार हेतु 27 दिसम्बर, 2022 को आयोजित अमरुद दिवस में महानिदेशक, उपकार द्वारा मुख्य अतिथि के रुप में प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में अमरुद की नवीन

अमरुद दिवस पर मुख्य अतिथि के रुप में उद्बोधन देते हुए महानिदेशक, उपकार डा. संजय सिंह

किस्मों, प्रौद्योगिकी के विकास और प्रदेश में अमरुद की उत्पादकता बनाये रखने, अमरुद में रोग एवं कीट प्रबंधन इत्यादि के संबंध में विभिन्न व्याख्यान दिये गये एवं चर्चा की गई। इस अवसर पर महानिदेशक ने संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए सार्वजनिक स्वास्थ्य सुधार के लिये स्टार्टअप्स की भागीदारी के साथ अमरुद पर पोस्ट हार्वेस्ट, वैल्यू एडिशन तकनीकों पर अनुसंधान किये जाने हेतु बल दिया। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों/विभागों के वैज्ञानिकों और अधिकारियों के साथ किसानों एवं छात्र–छात्राओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ अमरुद के बाग का निरीक्षण करते हुए महानिदेशक एवं उपमहानिदेशक, उपकार

आजादी का अमृत महोत्सव – हर घर तिरंगा कार्यक्रम

कृषि अनुभाग–5, उ.प्र. शासन के पत्रांक स. 0657/12–6–2022–10एई/2022, दिनांक 21 जुलाई, 2022 के क्रम में उपकार द्वारा 11–17 अगस्त, 2022 तक स्वतंत्रता सप्ताह तथा हर घर तिरंगा कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु शासन के दिशानिर्देशानुसार विभिन्न वैज्ञानिक कार्यक्रमों यथा संगोष्ठी/कार्यशाला/बैठक तथा डायरेक्ट सीडेड राइस (डी.एस.आर.) प्रोत्साहन हेतु प्रदेश में प्रदर्शन आयोजित कराये गये। इसके अतिरिक्त विभिन्न नवीन शोध प्रस्ताव तैयार कर संस्थानों को वित्त पोषण हेतु प्रेषित किये गये हैं। उपकार द्वारा प्रयोग की जाने वाली स्टेशनरी,

प्रपत्रों, लेटर हेड, लिफाफा आदि पर आजादी का अमृत महोत्सव–हर घर तिरंगा का लोगो मुद्रित कराया गया तथा कार्यालय परिसर में आजादी का अमृत महोत्सव–हर घर तिरंगा का बैनर तथा स्टैण्डी लगाये गये। परिषद के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा कार्यालय की साफ–सफाई कर तिरंगे एवं तिरंगी झंडियों से सजावट की गई। देशभक्ति के गीतों के साथ प्रभात फेरी तथा मार्चपास्ट किया गया और शपथ भी ली गई। सभी कार्मिकों को झंडा एवं तिरंगा बैज वितरित किया गया तथा अपने–अपने घरों में तिरंगा फहराने हेतु प्रेरित किया गया।

आजादी का अमृत महोत्सव-हर घर तिरंगा के अवसर पर उपकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम का एक दृश्य

प्रशिक्षण

- बैंकर ग्रामीण विकास संस्था, लखनऊ द्वारा बिल्डिंग क्लाईमेट स्मार्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर विषय पर 19–21 अक्टूबर, 2022 तक आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपकार के सचिव श्री पियूष कुमार शर्मा, उपमहानिदेशक डा. संजीव कुमार तथा वैज्ञानिक अधिकारियों डा. विनोद कुमार तिवारी एवं डा. सुजीत कुमार ने प्रतिभाग किया।
- भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ द्वारा रीसेन्ट एप्रोचेस फॉर डबलिंग फार्मर्स इनकम इन शुगरकेन बेस्ड क्रॉपिंग सिस्टम विषय पर 08–28 दिसम्बर, 2022 तक आयोजित 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (विंटर स्कूल) में उपकार के वैज्ञानिक अधिकारी डा. जयपाल ने प्रतिभाग किया।

नियुक्तियां

महानिदेशक – उत्तर प्रदेश शासन, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान अनुभाग के कार्यालय ज्ञाप सं. 2657/2021/67–कृशिअ–21–700(4)/94टीसी, दिनांक 29 अक्टूबर, 2021 के अनुपालन में महानिदेशक, उपकार के पद का कार्यभार डा. संजय सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय पादप जैवप्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली को 16 नवम्बर, 2021 को हस्तांतरित हुआ।

डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार

सचिव – उत्तर प्रदेश शासन, कृषि अनुभाग–1 के कार्यालय ज्ञाप सं. 2744/12–1–2021–112/2020, दिनांक 24 दिसम्बर, 2021 के अनुपालन में सचिव, उपकार के पद का कार्यभार श्री पियूष कुमार शर्मा को 26 दिसम्बर, 2021 को हस्तांतरित हुआ।

पियूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार

इससे पूर्व कृषि अनुभाग–1, उ.प्र. शासन के कार्यालय ज्ञाप सं. 1687/12–1–21–112/2020, दिनांक 19 अगस्त, 2021 के द्वारा श्री राम सधन राम, सचिव, उपकार के आकस्मिक निधन से रिक्त पद का प्रभार (पूर्णतया अस्थायी व्यवस्था के अन्तर्गत) श्री जितेन्द्र कुमार, प्रबन्ध निदेशक, उ.प्र. बीज विकास निगम को दिया गया, जिसके अनुपालन में श्री जितेन्द्र कुमार द्वारा दिनांक 24 अगस्त, 2021 को सचिव, उपकार का पदभार ग्रहण किया गया।

मृतक आश्रित – परिषद आदेश सं. 1186/364/मृतक आ./क.सह./नियुक्ति/2021, दिनांक 25 मार्च, 2021 के द्वारा श्रीमती पूनम लता पत्नी स्व. श्री देशराज की नियुक्ति उपकार में मृतक आश्रित के रुप में वेतनमान रू. 5200–20200, ग्रेड पे रू. 2000/– में कनिष्ठ सहायक के पद पर की गयी, जिसके क्रम में उनके द्वारा दिनांक 26 मार्च, 2021 को योगदान दिया गया।

विदाई

- उपकार में उपमहानिदेशक के पद पर कार्यरत डा. राजवीर सिंह राठौर 62 वर्ष की अधिवर्षता आयु पूर्ण कर 31 दिसम्बर, 2021 को सेवानिवृत्त हुए। डा. राठौर परिषद में 13 मई, 1997 से कार्यरत थे।

डा. राजवीर सिंह राठौर

- उपकार में कम्प्यूटर आपरेटर के पद पर कार्यरत श्री सुरेन्द्र प्रकाश 60 वर्ष की अधिवर्षता आयु पूर्ण कर 30 अप्रैल, 2022 को सेवानिवृत्त हुए। श्री सुरेन्द्र प्रकाश परिषद में 06 दिसम्बर, 1993 से कार्यरत थे।

श्री सुरेन्द्र प्रकाश

- उपकार में वैयक्तिक सहायक ग्रेड–2 के पद पर कार्यरत श्री विजय कुमार 60 वर्ष की अधिवर्षता आयु पूर्ण कर 31 अगस्त, 2022 को सेवानिवृत्त हुए। श्री विजय कुमार परिषद में 12 अगस्त, 1992 से कार्यरत थे।

श्री विजय कुमार

शोक संवेदना

उपकार में सचिव के पद पर कार्यरत डा. राम सधन राम का 23 जुलाई, 2021 को आकस्मिक निधन हो गया। डा. राम सधन राम परिषद में 14 जुलाई, 2020 से कार्यरत थे।

स्व. डा. राम सधन राम

संरक्षक : **डा. संजय सिंह,** महानिदेशक

संपादक : **डा. संजीव कुमार,** उपमहानिदेशक

प्रकाशक : सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद, अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010, उ.प्र.

फोन : 0522–2721626, ई–मेल : upcar12@gmail.com, dg-upcar@up.gov.in; वेबसाईट : upcaronline.org

मुद्रक : स्टेशनरी हाउस, आर्य नगर रोड, मोती नगर चौराहा, लखनऊ–226 004